आंकिक मुद्रा प्रणाली

(Digital Currency System)

अंकमुद्रा का परिचय :– *किसी भी आर्थिक व्यवहार के लिए वैकल्पिक रूप से प्रयुक्त होनेवाली मुद्रा के आंकिक स्वरूप को 'अंकमुद्रा' कहते हैं। यह अप्रत्यक्ष मुद्रा कहलाती है। इसका कोई प्रकट या स्थूल रूप नहीं होता। अंकमुद्रा वास्तव में ऐतिहासिक दृष्टि से मौद्रिक विकासयात्रा का अत्यंतिम प्रतिफलन है। मौद्रिकनीति की अल्पविकसित अवस्था में वस्तुमुद्रा, अर्धविकसित अवस्था में धातुमुद्रा, अधिविकसित अवस्था में कागजीमुद्रा तथा पूर्णविकसित अवस्था में अंकमुद्रा (**Digital Currency**) का उदय होता है। स्पष्ट है कि मौद्रिकनीति की विकासयात्रा से मुद्रा की क्रमशः चार अवस्थाएँ प्रकट होती हैं– वस्तुमुद्रा, धातुमुद्रा, कागजीमुद्रा, अंकमुद्रा। अतः 'अंकमुद्रा' को मौद्रिक विकास का शिखर कहा जा सकता है।*

आंकिक मुद्रा प्रणाली का परिचय :– *आंकिक मुद्रा प्रणाली केवल लेखांकन प्रक्रिया द्वारा अंकमुद्रा का प्रचालन करती है। किसी भी वस्तु के विकल्प के रूप में यह अंकमुद्रा अप्रत्यक्ष भूमिका निभाती है। जबकि अन्य मौद्रिक प्रणालियों में मुद्रा का प्रत्यक्ष अस्तित्व होता है। वस्तुविनिमय प्रणाली में तो एक वस्तु के बदले में दूसरी वस्तु ही मुद्रा की भूमिका निभाती है। इसीप्रकार से धातुमुद्रा अथवा कागजीमुद्रा की प्रणालियों में भी धातु के सिक्के अथवा कागज के नोट प्रत्यक्ष रूप से प्रचलित होते हैं। किन्तु अंकमुद्रा प्रणाली में मुद्रा का प्रत्यक्ष अस्तित्व नहीं होता, बल्कि राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक चाहे वह व्यक्ति हो अथवा सरकारी/गैरसरकारी संस्था, वह किसी अधिकोष (**Bank**) का लेखाधारक (**Accountholder**) होता है। इसी लेखे (**Account**) द्वारा समस्त मौद्रिक लेन–देन सहजतापूर्वक संभव होते हैं। एक लेखे से दूसरे लेखे में धन का स्थानांतरण ही मौद्रिक लेन–देन का माध्यम होता है।*

आंकिक मुद्रा प्रचालन के माध्यम :– *आंकिक मुद्रा प्रणाली वास्तव में एक मौद्रिक लेखांकन पद्धति है, जिसमें प्रत्येक मौद्रिक लेन–देन बैंकों या सरकारी अधिकोषालयों के माध्यम से लिखित रूप में किया जाता है। लेखांकन पर आधारित मौद्रिक व्यवहार वाली आंकिक मुद्रा प्रणाली के अन्तर्गत मुद्राप्रचालन के निम्नलिखित दो माध्यम हो सकते हैं :–*

1) ***सामान्य लेखांकन*** *: बैंकचेक, बैंकड्राफ्ट, बैंकट्रान्सफर, पेआर्डर, डेबिटकार्ड, क्रेडिटकार्ड, ग्रीनकार्ड आदि को अनिवार्य बनाकर एक सामान्य लेखांकन पद्धति अपनायी जा सकती है। (यदि रु.100/– से नीचे तक भी स्थूलमुद्रा प्रयुक्त की जाए है, तो मुद्रा का प्रकट अस्तित्व होने के कारण छोटे–छोटे मौद्रिक अपराध चलते रह सकते हैं। स्थूल मुद्राप्रचालन की नीति को किसी भी रूप में पूर्णतः शुद्ध नहीं माना जा सकता। अतः सामान्य लेखांकन पद्धति में भी पूर्णतः आंकिक मुद्रा अपनायी जानी चाहिए।)*

2) ***इलेक्ट्रानिक लेखांकन*** *: इलेक्ट्रानिक डिवाइसों जैसे– कम्प्यूटर, मोबाइल, टैब, आईपाड अन्य साधारण एवं सस्ती डिवाइसों को अपनाकर इलेक्ट्रानिक लेखांकन पद्धति अपनाई जा सकती है। इलेक्ट्रानिक लेखांकन पद्धति में किसी भी राशि के लिए स्थूल मुद्रा चलाने की आवश्यकता नहीं होती। धन की प्रत्येक मौद्रिक इकाई का लेन–देन इलेक्ट्रानिक लेखांकन पद्धति के द्वारा बड़ी सरलतापूर्वक सम्पन्न हो सकता है। इलेक्ट्रानिक लेखांकन पद्धति के अन्तर्गत छोटे से छोटे मौद्रिक लेन–देन अथवा क्रय–बिक्रय संभव होते हैं, अतः इससे सब प्रकार के मौद्रिक अपराध पूर्णतः समाप्त हो जाते हैं। यह पद्धति 100% तक शुद्ध प्रमाणित हो सकती है।*

आंकिक मुद्रा प्रणाली अपनाने की प्रक्रिया :– *वर्तमान परिस्थितियों में आंकिक मुद्रा प्रणाली लागू करने के लिए सरकार द्वारा निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैं :–*

1) *सरकार द्वारा इसके लिए प्रतिक्षेत्र एक राष्ट्रीय अधिकोष (National Bank) की स्थापना की जाए, अथवा वर्तमान बैंकों (RBI, SBI) आदि को मौद्रिक प्रचालन का अधिकार दिया जाए। डाकखानों, स्थानीय प्रशासनिक केन्द्रों तथा सभी संस्थाओं, कम्पनियों, दुकानों, कार्यालयों आदि के माध्यम से यह 'अंकमुद्रा' प्रचालित हो सकती है। इसके लिए ऐसे विशिष्ट केन्द्रों में मौद्रिक लेन–देन के इलेक्ट्रानिक उपकरण स्थापित किए जा सकते हैं। अतः अनपढ़ों, गरीबों आदि को अपने लिए विशेष इलेक्ट्रानिक उपकरण खरीदना आवश्यक नहीं रह जाएगा। प्रत्येक मौद्रिक लेन–देन का लिखित प्रमाण ही इसकी आवश्यकता है। इससे भ्रष्टाचार, कालाधन, नकलीमुद्रा, टैक्सचोरी एवं अन्य मौद्रिक अपराध पूर्णतः समाप्त हो जाएँगे।*

2) *इलेक्ट्रानिक लेखांकन पद्धति (Electronic Accounting System) अपनाने के लिए सरकार को सभी आवासीय क्षेत्रों में एक दूरसंचार सेवा व्यवस्थित करनी होगी, जिससे कि टेलीफोन एवं इण्टरनेट के माध्यम से यह अंकमुद्रा संचालित करी जा सके। वर्तमान इलेक्ट्रानिक युग में जबकि दूरसंचार सेवा सार्वजनिक होती जा रही है, आंकिक मुद्रा प्रणाली अपनाना बिल्कुल सरल है।*

3) *सामान्यतः इसे बैंकचेक/बैंकड्राफ्ट/बैंकट्रांसफर आदि के द्वारा मौद्रिक लेन–देन किए जा सकते हैं। उद्देश्य है लेखांकित लेन–देन, चाहे वह हस्तलिखित हो अथवा इलेक्ट्रानिक लिखित। इलेक्ट्रानिक डिवाइस के माध्यम से भी डिजिटल प्रणाली अपनाकर लेखांकित लेन–देन आदि सभी प्रकार के मौद्रिक व्यवहार सहज ढंग से किए जा सकते हैं। लेखांकन के दोनों ही माध्यम अपनाए जाने संभव हैं।*

4) *दो में से कोई भी लेखांकन पद्धति अपनायी जा सकती है। इससे धात्विक या कागजी मुद्रा को ढालने, छापने, ढोने, रखने, सँभालने आदि के व्यय भी समाप्त हो जाते हैं, जिससे आर्थिक बचत होती है। सामान्य लेखांकन पद्धति में*

छोटे-मोटे लेन-देन के लिए अत्यल्प मूल्यवाली मुद्रा आवश्यकतानुसार छापी भी जा सकती है। उससे भ्रष्टाचार या कालेधन आदि कोई भी मौद्रिक अपराध विकट रूप धारण नहीं करते, तथापि यह स्थूल मुद्रा निश्चित रूप से सब प्रकार के मौद्रिक अपराधों को जन्म देती है। जिस स्तर की स्थूल मुद्रा होगा, उसी स्तर के मौद्रिक अपराध होते रहेंगे।

5) *वर्तमान परिस्थितियों में बहुत से नागरिकों के पास श्वेत या कालेधन के रूप में नगदी विद्यमान है। उसके लिए सरकार सभी नागरिकों को एक निर्धारित समयावधि, जैसे एक माह, के भीतर अपने नगदधन को बैंकों में जमाकर उसे डिजिटल रूप में परिवर्तित कराने का अधिकार दे सकती है। श्वेत या काले धन को डिजिटल या आंकिक रूप में परिवर्तित करने पर किसी भी प्रकार के शुल्क या दण्ड या आपराधिक आरोप या जाँच आदि से नागरिकों को छूट दी जा सकती है, यदि वे इस समयावधि के भीतर सभी स्थूल मुद्राओं को लेखांकित करवाना चाहें, तो इस पर कोई बाधा उपस्थित न की जाए, जिससे कि सम्पूर्ण खुली या छिपी धनराशि का लेखांकन हो सके। इसप्रकार बैंकों में जमा की जानेवाली सम्पूर्ण मुद्राओं को लेखांकित होने के पश्चात् उन्हें नष्ट करके सदा के लिए समाप्त कर दिया जाए। इस उपाय के द्वारा सम्पूर्ण 'कालाधन' एक महीने के भीतर स्वयमेव 'श्वेतधन' के रूप में परिवर्तित हो जाएगा, तथा वह राष्ट्रहित में उपयोग हो सकेगा। इससे राष्ट्रीय आर्थिक विकास की संभावना बढ़ेगी।*

<u>आंकिक मुद्रा प्रणाली की मुख्य विशेषताएँ</u> :- *इसकी मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :-*

1) <u>सरलता</u> *:- आंकिक मुद्रा प्रणाली वर्तमान की भयंकर मौद्रिक समस्याओं के समाधान का एकमात्र और सर्वाधिक सरल उपाय है। इस प्रणाली से अधिक सरल दूसरा कोई भी उपाय किसी भी राष्ट्रीय व्यवस्था में संभव नहीं है।*

2) <u>निर्व्ययता</u> *:- धातुमुद्रा या कागजी मुद्रा के ढालने, छापने, ढोने, रखने, सँभालने, गिनने, सुरक्षा करने आदि पर होनेवाले व्ययों से यह प्रणाली पूर्णतः मुक्त है।*

3) <u>निर्भयता</u> *:- चोरी, लूट, ठगी, धोखाधड़ी, जेबकतरी, हेराफेरी, डकैती, जालसाजी आदि के कारण उत्पन्न खतरों या भयों से यह प्रणाली पूर्णतः मुक्त है।*

4) <u>प्रामाणिकता</u> *:- इस प्रणाली के अन्तर्गत समस्त आर्थिक व्यवहार, मौद्रिक लेन-देन, क्रय-बिक्रय आदि पूर्णतः लेखांकित होने के कारण प्रामाणिक रहता है। अतः किसी भी मौद्रिक अपराध के लिए किसी गवाह अथवा अन्य प्रमाण की आवश्यकता नहीं रह जाती।*

5) <u>पारदर्शिता</u> *:- आंकिक मुद्रा प्रणाली लेखांकन पद्धति पर आधारित होने के कारण पूर्णतः पारदर्शी होती है, क्योंकि इस प्रणाली के अन्तर्गत समस्त मौद्रिक लेन-देन एक लेखे से दूसरे लेखे में दर्ज होते रहते हैं। अतः दबा-छिपाकर कोई भी मौद्रिक अपराध नहीं किया जा सकता।*

<u>आंकिक मुद्रा प्रणाली अपनाए जाने के लाभ</u> *:- आंकिक मुद्रा प्रणाली अपनाये जाने के निम्नलिखित प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष लाभ हो सकते हैं :-*

1) <u>चोर नहीं चोरी पर नियन्त्रण</u> *:- आंकिक मुद्रा प्रणाली अपनानेवाली राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में मौद्रिक चोरी संभव नहीं होती, क्योंकि इस प्रणाली में मुद्रा का कोई स्थूल स्वरूप नहीं होता, जिसे चुराया, लूटा या छीना जा सके। इस प्रणाली के अन्तर्गत मुद्राप्रचालन शुद्ध एवं पवित्र बना रहता है। स्थूल मौद्रिक अस्तित्व के कारण उत्पन्न होनेवाले अपराधों पर स्वतः नियन्त्रण बना रहता है। चोरी न होने पर चोर को पकड़ने, जाँचने, दण्डित करने की प्रक्रिया नहीं अपनानी पड़ती। पापी को दण्डित करने से बेहतर है पाप के कारणों का निवारण किया जाए।*

2) <u>सरकारी लोकपाल विधेयक अथवा जनलोकपाल विधेयक पारित करने/कराने की आवश्यकता नहीं</u> *:- अपराध होने के पश्चात् किसी भी जाँच एजेन्सी की आवश्यकता होती है, किन्तु यदि अपराध होने से पहले अपराध के कारणों का निवारण करना हो, तो अपराधी की जाँच, धर-पकड़ एवं दण्डप्रक्रिया की आवश्यकता नहीं होती। अतः आंकिक मुद्राप्रणाली अपनाने के पश्चात् तत्सम्बन्धी सभी प्रकार की अपराधिक जाँच एजेन्सियाँ और दण्डविधियाँ अनावश्यक हो जाती है। वर्तमान में विभिन्न आन्दोलनों द्वारा जिस लोकपाल विधेयक को पारित करने की माँग की जा रही है, वह निरर्थक हो जाएगी, यदि आंकिक मुद्राप्रणाली अपनायी जा सके। चिकित्सा की तुलना में परहेज अच्छा माना जाता है। जिस व्यवस्था में चोरी की संभावना नहीं होती, उस राष्ट्रीय व्यवस्था के नागरिक चोर नहीं बन पाते। अतः किसी जाँच या दण्डप्रक्रिया की आवश्यकता कहाँ?*

3) सी.बी.आई. अथवा अन्य किसी भी जाँच एजेन्सी की आवश्यकता नहीं.

4) मौद्रिक अपराधों की जाँच, मुकदमेबाजी एवं जेल या दण्डप्रक्रिया पर होनेवाले अपव्ययों की समाप्ति.

5) मुद्रा की छपाई, ढलाई, ढुलाई, गिनाई, भण्डारण, सुरक्षा आदि पर होने वाले व्ययों की समाप्ति.

6) अनपढ़ों, अल्पशिक्षितों, गरीबों आदि को अनेक कारणों से होने वाली मौद्रिक हानियों से सुरक्षा.

7) समस्त मौद्रिक अपराधों पर नियन्त्रण के कारण समाज का नैतिक उत्थान.

<u>आंकिक मुद्रा प्रणाली के प्रभाव</u> *:- आंकिक मुद्रा प्रणाली अपनाये जाने के कारण मौद्रिक अपराध पूर्णतः समाप्त हो जाते हैं, अतः इसके निम्नलिखित प्रभाव प्रकट होते हैं :-*

1) ***<u>भ्रष्टाचार से मुक्ति</u>*** *:– आंकिक मुद्रा प्रणाली राष्ट्र में मौद्रिक भ्रष्टाचार को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। किसी भी राजनेता, राजकीय पदाधिकारी या नागरिक या अन्य किसी व्यक्ति या सत्ता द्वारा किसी भी रूप में मौद्रिक भ्रष्टाचार नहीं किया जा सकता। घूसखोरी, गबन, घोटाला आदि मौद्रिक अपराध रूपी भ्रष्टाचार आंकिक मुद्रा प्रणाली अपनानेवाले राष्ट्र में सर्वथा असंभव होते हैं।*

2) ***<u>कालेधन से मुक्ति</u>*** *:– आंकिक मुद्रा प्रणाली किसी भी राष्ट्र में कालेधन को भी प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। कालेधन का निर्माण, छिपाव, दबाव या बचाव इस प्रणाली के अन्तर्गत असंभव होता है। आंकिक मुद्रा प्रणाली अपनाते ही छिपा हुआ कालाधन स्वतः बाहर निकलने को विवश हो जाता है, तथा कालेधन के निर्माण की परिस्थितियाँ ही समाप्त हो जाती हैं, क्योंकि जो कुछ भी धनसंग्रह है, वह बैंकखातों में दर्ज होने के कारण सदैव पारदर्शी रहता है। सोना, चाँदी आदि किसी भी मूल्यवान धातु या वस्तु के रूप में भी कालाधन संग्रहित नहीं किया जा सकता, क्योंकि उन वस्तुओं का क्रय–बिक्रय भी बैंकखातों के माध्यम से ही किए जाने की अनिवार्यता होती है। अतः वस्तुओं का छिपाव, दबाव भी संभव नहीं होता। धीरे–धीरे प्रत्येक वस्तु के क्रय–बिक्रय अथवा लेन–देन का रिकार्ड दर्ज हो जाता है।*

3) ***<u>नकलीमुद्रा से मुक्ति</u>*** *:– आंकिक मुद्रा प्रणाली के अन्तर्गत मुद्रा का कोई स्थूल अस्तित्व न होने के कारण किसी भी आपराधिक सत्ता द्वारा बाजार में नकली मुद्रा प्रचालित नहीं की जा सकती। अतः आंकिक मुद्रा प्रणाली नकलीमुद्रा को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है और उसके अस्तित्व को पूर्णतः समाप्त कर देती है।*

4) ***<u>टैक्सचोरी से मुक्ति</u>*** *:– आंकिक मुद्रा प्रणाली राष्ट्र में टैक्सचोरी के अपराध को भी प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। यह प्रणाली अपनाने वाले राष्ट्र में किसी भी व्यक्ति, संस्था या सत्ता द्वारा किसी भी प्रकार से टैक्सचोरी का अपराध नहीं किया जा सकता, क्योंकि समस्त मौद्रिक लेन–देन, आदान–प्रदान अथवा क्रय–बिक्रय बैंकखातों के माध्यम से होने के कारण पारदर्शी होते हैं। किसी भी प्रकार के मौद्रिक लेन–देन को छिपाया नहीं जा सकता। अतः टैक्स की गणना बिलकुल सरल एवं शुद्ध हो जाती है।*

5) ***<u>अन्य मौद्रिक अपराधों से मुक्ति</u>*** *:– आंकिक मुद्रा प्रणाली उपरोक्त चारों अपराधों को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करने के साथ–साथ अन्य अनेक प्रकार के आर्थिक या अनार्थिक अपराधों एवं संकटों को भी अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है, जैसे– जेबकतरी, हेराफेरी, चोरी, लूट, डकैती, अपहरण, फिरौती, सुपारी, धोखाधड़ी, जालसाजी आदि अनेक प्रकार के मौद्रिक अपराध या संकट स्वतः समाप्त होने लगते हैं। अतः सम्पूर्ण राष्ट्र के नागरिकों का नैतिक उत्थान होने लगता है। अर्थव्यवस्था शुद्ध होने लगती है। अपराधों में गिरावट आने लगती है, तथा धीरे–धीरे सम्पूर्ण अपराध समाप्ति की ओर चले जाते हैं, और समाज अथवा राष्ट्र में सत्युगीन वातावरण उत्पन्न होने लगता है। आपराधिक मुकदमेबाजी, पारस्परिक वाद–विवाद, आतंकवाद जैसी समस्याएँ भी इस मौद्रिक प्रणाली के द्वारा प्रभावित होकर क्षीण होने लगती हैं।*

❁❁❁

न्याय धर्म सभा, जगजीतपुर, कनखल, हरिद्वार,
फो0 : 01334–244760, मो0 : 09319360554,
website : www.nyayadharmsabha.org,
email : info@nyayadharmsabha.org, nyaydharmsabha@gmail.com

❁❁❁